Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रश्री प्रकाशन-पुष्प-३

आठवी शती में संस्कृत में रचित

जैनाचार्य श्री हरिभद्रसूरि के

धूर्ताख्यान

का

हिन्दी में सार

लेखक

कस्तूरमल बांठिया

* *

प्रकाशक

बांठिया फाउन्डेशन, कानपुर

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Vani Trust Donations

आठवीं शती में संस्कृत में रचित
जैनाचार्य श्री हरिभद्रसूरि के

धूर्ताख्यान

का

हिन्दी में सार

लेखक—
कस्तूरमल बांठिया
अजमेर

द्रव्य सहायक—
के० बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया चेरीटेबल ट्रस्ट
५२/१६ शक्कर पट्टी
कानपुर—२०८००१

प्रकाशक—
बांठिया—फाउन्डेशन, कानपुर—१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशक —
प्रकाशचन्द बांठिया
मंत्री
के. बु. फू. बांठिया
चेरीटेबल ट्रस्ट
५२/१६ शक्कर पट्टी
कानपुर–१

प्रति – पांचसौ

आवृत्ति प्रथम

•

वीर संवत २५०८
ई० सन् १९८२
वि० संवत २०३९

•

मूल्य—१-५०

•

मुद्रक—
सुनील लूणिया
आशीष प्रिन्टर्स
ब्रह्मपुरी, अजमेर

अनुक्रम

	पृष्ठ
१. प्रकाशकीय	(१)
२. श्री हरीभद्रसूरि	१
३. भूमिका	५
४. पहला आख्यान	७
५. दूसरा आख्यान	१४
६. तीसरा आख्यान	२०
७. चतुर्थ आख्यान	२६
८. पंचम आख्यान	३१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

प्रकाशकीय

चन्द्रश्री प्रकाशन ग्रन्थमाला का तीसरा पुष्प आपके सम्मुख रखते हुए प्रसन्नता है :

प्रस्तुत पुस्तक आठवीं शती के एक महान् जैनाचार्य श्री हरिभद्रसूरि द्वारा प्राकृत भाषा में रचित ४८५ गाथा का काव्य धूर्ताख्यान का संक्षिप्त सार है। यह हिन्दी सार बहुत पहले लोकप्रिय नवनीत मासिक के जुलाई, १९५८ के अंक में प्रकाशित हुआ है। उसे ही लेखक को इच्छानुसार अब हमने पुस्तकाकार में प्रकाशित किया है। श्री हरिभद्रसूरि का यह काव्य प्राचीन भारतीय साहित्य का एक उत्कृष्ट नमूना है।

लेखक स्व. श्री कस्तूरमलजी बांठिया जैन दर्शन, इतिहास व साहित्य के मर्मज्ञ थे। प्रस्तुत आख्यान को कितने संक्षेप में सुंदर रूप से लिखा है इससे उनकी विलक्षण बुद्धि एवं चातुर्य का पता चलता है।

स्व. श्री बांठिया सा. ने जैन दर्शन की कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं तथा अनुवाद की है। उनकी उपलब्ध पाण्डु-लिपियों में यह दूसरी पुस्तक हम प्रकाशित कर रहे हैं।

धार्मिक पुस्तकों के अतिरिक्त वाणिज्य की भी पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं जो कई स्थानों पर पाठ्यपुस्तकों में सम्मि-लित की हुई है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्व. श्री बांठिया सा. की जन्मभूमि होने का सौभाग्य अजमेर को है। मूलतः आपके पूर्वज बीकानेर से अजमेर आकर बस गये थे।

स्व. श्री बांठियाजी के साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए अजमेर निवासी श्री चांदमलजी सा. सीपाणी ने हमें प्रेरणा दी उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

बुराइयों एवं कपोल कल्पित बातों से बचने के लिए यह पुस्तक प्रेरणास्पद है। पाश्चात्य साहित्य तो ऐसी पुस्तकों से ओतप्रोत है।

आशा है पाठक इससे लाभ उठावेंगे।

हजारीमल बांठिया
अध्यक्ष

प्रकाशचन्द बांठिया
मंत्री

के. बुलाकीचन्द फूलचन्द बांठिया चेरीटेबल ट्रस्ट
५२/१६ शक्कर पट्टी,
कानपुर–१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आचार्य श्री हरिभद्रसूरि

आचार्य हरिभद्र का जन्म चित्तौड़ के ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम शंकर भट्ट और माता का नाम गंगा था। ये अपने समय के उच्च कोटि के विद्वान थे। ये चित्तौड़ नरेश के पुरोहित थे। राज्य दरबार में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। इन्हें अपनी विद्वता पर बड़ा घमंड था। ज्ञान भार से पेट फट न जाय, इस कारण वे पेट पर स्वर्ण पट्टी बांधे रहते थे। इसके साथ-साथ उनकी वह प्रतिज्ञा थी कि जिस किसी का सुना हुआ वचन का अर्थ न समझ सकूंगा उसका मैं शिष्य बन जाऊंगा।

एकदा रात्रि को राजसभा से लौटते समय जैन उपाश्रय के पास से निकले। उपाश्रय में साध्वी संघ की प्रवर्तिनी 'महतरा याकिनी' द्वारा बोले श्लोक को सुना, परन्तु बहुत चिंतन करने पर भी वे उसका अर्थ न समझ सके। तब पालकी से उतर वे उपाश्रय में साध्वीजी के पास गये और गाथा का अर्थ पूछा। पर साध्वीजी ने अर्थ समझने के लिए श्री *जिनदत्तसूरिजी (श्री जिनभद्रसूरिजी) के लिये निर्देश दिया।

---

* श्री हरिभद्र सूरि ने अपनी कृतियों में गुरु का नाम श्री जिनदत्त बताया है। संभवतः श्री जिनभद्र के निर्देशवती आचार्य श्री जिनदत्त थे।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दूसरे दिन प्रातः काल वे जिनभद्रसूरि के पास गये और उस सूत्र का अर्थ पूछा तो गुरुजो ने कहा कि जो दीक्षा लेकर विधिपूर्वक शास्त्रों का अध्ययन करता है उसे ही अर्थ बताया जाता है। यह सुनकर उन्होंने दीक्षा लेकर जैन शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया। जिन साध्वीजी से यह गाथा सुनी थी उन साध्वी याकिनी महतरा को धर्ममाता की तरह मानने लगे और अपने रचे सब ग्रंथों में उन्होंने उनकी पुण्य स्मृति कायम रखी। इस प्रकार वे 'याकिनी सुनू' के नाम से भी प्रसिद्ध हुए।

उनके दो भानजे हंस और परमहंस थे। उन्होंने भी श्री हरिभद्रसूरि से दीक्षा ली। ये दोनों शिष्य बहुत विद्वान थे। मुख्यतः प्रमाण शास्त्र में विशेष प्रवीण थे। वे गुरु से आज्ञा लेकर, वेष बदलकर बौद्ध प्रमाण शास्त्रों के अध्ययन के लिए बौद्ध विहार में गये। कुछ काल के अध्ययन के बाद उनका भेद खुल गया और बौद्धों ने हंस को मार डाला और परमहंस किसी प्रकार बचकर गुरु हरिभद्र के पास पहुँच गए और उन्हें सब वृत्तांत सुनाया। वृत्तांत सुनाते २ परमहंस का भी प्राणदीप बुझ गया। दो उत्तम विद्वान शिष्यों के विरह से श्री हरिभद्रसूरि की क्रोधाग्नि भड़क उठी और उन्होंने १४४४ बौद्ध भिक्षुओं की हिंसा का उपक्रम कर इसका बदला लेने की प्रतिज्ञा की। परन्तु बाद में उनके गुरु ने तीन श्लोक उनको लिखकर भेजे जिनको पढ़ते ही उनका क्रोध शांत हो गया और पश्चाताप करने लगे। और इस प्रतिज्ञा के बदले उन्होंने १४४४ ग्रंथों की रचना करने की प्रतिज्ञा ली। और

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
वे ज्ञान संतति के विकास में लगे पर शिष्यों की विरह वेदना कम न हुई अत: प्रत्येक ग्रंथ के साथ उन्होंने विरह शब्द जोड़ा ।

इस प्रकार अपने पुरुषार्थ से १४४४ ग्रंथों की स्चना की । परन्तु उनमें से अब तक ८८ ग्रंथों की ही उलब्धि हुई है और इनमें से सिर्फ २० प्रकाशित हुऐ हैं ।

आचार्य श्री हरिभद्र की कृतियां जैन समाज का अनुपम वैभव है । आगमिक क्षेत्र में वे सर्व प्रथम टीकाकार थे । आगम साहित्य के अतिरिक्त अन्य ग्रंथों पर भी उन्होंने कई ठीकाएं लिखी । टीका साहित्य की तरह योग साहित्य के आदि प्रणेता भी ये ही थे और इस पर कई ग्रंथ लिखे । इसी प्रकार चार अनुयोग एवं अनेकांत पर गम्भीर रचनाएं की । षड़ दर्शन पर ग्रंथ लिखने वाले ये सब से प्रथम लेखक हैं । और सब से बड़ी विशेषता इसमें यह है कि किसी मत का खण्डन न कर तटस्थ भाव से दर्शनों का प्रामाणिक निरूपण किया है । नास्तिक धारा को भी आस्तिक धारा के समक्ष प्रस्तुत कर उन्होंने महान् उदारता और तटस्थता का परिचय दिया है ।

उनका श्रेष्ठ कथा ग्रंथ है प्राकृत भाषा का समराइच्चकहा जो स्व. डॉ. हरमन याकोबी द्वारा संपादित होकर, बंगाल की 'रायल एशियाटिक सोसाइटी की बिबलोथिका इण्डिका,' ग्रंथमाल में प्रकाशित हुआ है । इसी प्रकार उनका लिखा धूर्ताख्यान भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ग्रंथ है ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
आचार्य श्री का युग पक्षपात का युग था। परन्तु ऐसे समय में भी उन्होंने समन्वयात्मक दृष्टि को प्रस्तुत करते हुए स्वयं कहा है कि—

पक्षपातो न मे वीरे, न द्वेषः कपिलादिषु।
युक्तिमद् वचनं यस्य यस्य कार्यः परिग्रहः॥

अर्थात्-वीर वचन में मेरा पक्षपात नहीं। कपिल मुनियों से मेरा द्वेष नहीं। जिनका वचन तर्क युक्त है—वही ग्राह्य है।

आज उनका सम्पूर्ण साहित्य उपलब्ध नहीं है किन्तु जो भी प्राप्त है उससे शोध लेखकों को यथेष्ठ सामग्री मिलती है।

आचार्य का समय कुछ विद्वानों ने छटी शताब्दी और कुछ ने ८वीं शताब्दी माना है।

स्व. श्री जिनविजयजी ने आचार्य श्री की स्मृति में चित्तोड़ में किले के नीचे 'हरिभद्रसूरि स्मारक' बनाने की योजना बनाकर, काफी निर्माण करा कर फिर उसे स्व. श्री प्रतापमलजी सेठिया की प्रेरणा से उसे अ. भा. श्री जिनदत्तसूरि सेवा संघ को भेंट कर दिया। पश्चात् अधूरे कार्य को सेवा संघ ने सम्पूर्ण कर "श्री हरिभद्रसूरिजी' की मूर्ति की प्रतिष्ठा मुनिजी के जीवन काल में ही करा दी गई। चित्तौड़ के किले में प्रवेश करने से पहले ही यह स्मारक दृष्टिगोचर होता है जहां श्रद्धालु भक्तजन जाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। परन्तु मुनिजी की योजना के अनुसार अभी भी इसमें काफी कार्य होना शेष है।

चाँदमल सोपाणी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

भूमिका

श्री हरिभद्रसूरि नाम से विक्रम की आठवीं शती में एक महान् जैनाचार्य हो गए हैं। वे बड़े तार्किक, शास्त्रज्ञ और कथाकार थे। किम्वदन्ती है कि इनने संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं में मिला कर कोई १४४४ ग्रन्थ भिन्न-भिन्न विषयों पर लिखे थे। परन्तु पुरा-खोजी इनके कोई ८८ ग्रन्थों का पता ही अब तक लगा पाए हैं और उनमें से भी केवल २० अब तक प्रकाशित हुए हैं। उनका वृहद् कथाग्रन्थ है प्राकृत भाषा का 'समराइच्चकहा' कि जो स्वर्गीय डा. हरमन याकोबी द्वारा सम्पादित होकर बंगाल की रायल एशियाटिक सोसाइटी की 'बिबलोथिका इण्डिका' ग्रन्थमाला में सन् १९२६ ई. में प्रकाशित हुआ था। जिस 'धूर्ताख्यान' का सार यहां दिया जा रहा है वह 'सिंघी जैन ग्रन्थमाला' भारतीय विद्या-भवन, बंबई द्वारा सन् १९४४ ई. में प्रकाशित हुआ है। यह प्राकृत भाषा की कुल ४८५ गाथा का एक ऐसा काव्य है जिसे अंग्रेजी साहित्यिक 'सेवयर' कहते हैं। भारतीय साहित्य में इस प्रकार के साहित्य का प्रायः अभाव ही कहा जाता है कि जिससे पाश्चात्य सभी भाषाओं के साहित्य ओत-प्रोत हैं। ऐसे साहित्य का सच्चा लक्षण अंग्रेज कवि ड्राइडन ने बुराइयों को सुधारना कहा है और इस दृष्टि से श्री हरिभद्रसूरि का यह काव्य प्राचीन भारतीय साहित्य के इस अंग का एक उत्कृष्ट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नमूना है। इसमें पांच धूर्तों की उनके मुख से ही कही गई कहानी है। प्रत्येक अपने असम्भव विस्मयकारी अनुभव सुनाता है जिन्हें दूसरा महाभारत, रामायण और पुराणों में वर्णित वैसी ही घटनाओं द्वारा सत्य प्रमाणित कर देता है। उन धूर्तों में एक धूर्ता स्त्री भी है जो अपने अनुभव सबसे अन्त में कहती है और उसके अन्य साथी पुराणादि की कथाओं से उन्हें सत्य सिद्ध करने का बारी-बारी से प्रयत्न करते हैं। अन्त में वह अपनी जीवन कथा का शेष कह कर उन सबको अकस्मात् ऐसे धर्म-संकट में डाल देती हैं कि जिसे यदि वे स्वीकार करते हैं तो उन्हें उसका दास होना पड़ता है और अस्वीकार करते हैं तो प्रतिज्ञानुसार एकत्रित धूर्त मण्डली को भोज देना पड़ता है। इस तरह वे उसके द्वारा चातुर्याभिभूत कर दिए जाते हैं। जब वे उसे चतुर शिरोमणि मान लेते हैं तो वह सबको भोजन देना भी स्वीकार कर लेती है और भोज के लिए आवश्यक धन चतुराई से अपने शिशु के वध का असत्य आरोप लगा कर एक साहूकार से ठग लाती है और घोर वर्षा के कारण बेकार बने धूर्तों की समस्त मण्डली को भोजन देकर संतुष्ट करती है। इस आख्यान का मुख्य ध्येय जैनधर्म की युक्तियुक्तता की छाप जमाना ही है, परन्तु इस आख्यान के अन्त में संकेत मात्र ही किया गया है, खुलकर प्रतिपादन कहीं भी नहीं किया गया है।

कलकत्ता
२० अगस्त, १९५०

कस्तूरमल बांठिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धूर्ताख्यान

पहला आख्यान

समृद्धिशाली उज्जैन नगरी के पास एक बड़ा सुरम्य उद्यान था। घूमते-घूमते वहां एक समय सैकड़ों ही ठग विद्या में पारंगत धूर्त पहुँच गए। उनके पांच नेताओं के नाम थे :—मूलदेव, कण्डरीक, एलाषाढ़, शश और खण्डपाना या खण्डवाण। पहले के चार तो पुरुष थे और खन्डपाना स्त्री थी। प्रत्येक पुरुष धूर्तराज के पांच सौ पुरुष अनुचर थे और खण्डपाना के पांच सौ स्त्री अनुचर। मूलदेव सबका बड़ा नेता था। जब वे उज्जैन नगरी के उस उद्यान में आकर ठहरे, तब से वहां ऐसी घोर वर्षा हो रही थी कि कोई भी कहीं अपना व्यवसाय करने जा नहीं सकता था और न कोई यात्री ही यात्रा करता था। सारे ही धूर्त वर्षा की ठण्ड से ठिठराते और भूख से कुड़मुड़ाते यह सोचने के लिए एकत्रित हुए कि पेट भराई के लिए क्या किया जाए? जब वे किसी एक निर्णय पर नहीं पहुँच सके तो धूर्त शिरोमणि मूलदेव ने प्रस्ताव किया कि बारी-बारी से नेता सब मण्डली को अपने जीवन अनुभव सुनाएं और जो धूर्त नेता उसको अविश्वसनीय एवम् असत्य सिद्ध कर देवे, वही सारी मण्डली को एक दिन का भोजन कराए। परन्तु जो महाभारत, रामायण, और पुराणादि के कथानकों से उसका समर्थन करते हुए उसकी

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
सत्यता में सब को विश्वास करा दे, वह कुछ भी नहीं दे और और सब धूर्तों का राजा बना दिया जाए। इस प्रस्ताव से सब सहमत हो गए और मूलदेव को ही सब से पहले अपने अनुभव वर्णन करने का आदेश दिया गया।

आदेशानुसार मूलदेव कहने लगा, 'मैं अपनी यौवन अवस्था की ही कथा कहता हूँ। जब मुझमें सम्पदा प्राप्त करने की उत्कट इच्छा जगी हुई थी। इसके लिए मैं ईश्वर जिसे रुद्र और शंकर भी कहते हैं, के पास इस तीव्र इच्छा से गया कि वह मुझको छह महीने तक गंगा अपने सिर पर धारण करने दे और अन्त में इसके फलस्वरूप मन चाही सम्पदा दे दे। जब मैं एक हाथ में छत्र और दूसरे हाथ में कमण्डल लेकर उनके पास जा रहा था तो जंगल में मैंने अपनी ओर ही चलते हुए पहाड़ के समान एक मदमत्त वन गज को दौड़ता हुआ आते देखा। मैं भय से एक दम कांप उठा। न तो बचाव का आस-पास कोई स्थान ही मुझे दीख रहा था और न निकल भागने का मार्ग ही। कोई अन्य उपाय नहीं देखकर प्राण बचाने के लिए तब मैं कमण्डलु में ही घुस गया। वह मस्त हाथी इससे बड़ा ही बिगड़ा और मेरे पीछे-पीछे वह भी कमण्डलु में घुस आया। लुका छुपी करते हुए छह महीने तक मैंने उसे वहां खूब ही छकाया। तदनन्तर मैं कमण्डलु की नालिका से बाहर निकल भागा। परन्तु हाथी भी जब पीछे-पीछे नालिका द्वारा बाहर निकलने लगा तो उसकी पूंछ का बाल नालिका छिद्र में पकड़ा गया और वह मेरे पीछे नहीं आ सका। इधर मुझे दौड़ते-दौड़ते अपने सामने समुद्र के समान विशाल गंगा फैली

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
हुई मिली। उसी को देखकर मैं भयभीत तो हुआ, परन्तु दूसरा कोई मार्ग नहीं होने से मैं उसे तैर कर दूसरी पार ईश्वर-शंकर के घर पर पहुँच ही गया। वहां मैंने क्षुधा तृषा सहते हुए गंगा को अपने सिर पर छह महीने तक धारण किया। अन्त में ईश्वर को प्रणाम कर मैं वहां से सीधा उज्जैन चला आया जहां मुझे तुम सब मिल गए। यदि इसको तुम सच मानते हो तो इसका दृष्टांत देकर मुझे विश्वास कराओ और झूंठ मानते हो तो सब मण्डली को प्रतिज्ञानुसार भोजन कराओ।

मूलदेव के अनुभव सुनकर दूसरा धूर्त-नायक कुण्डरीक कहने लगा, जिसने महाभारत, रामायण और पुराणादि पढ़े हैं, वह कोई भी इसे असत्य और अविश्वसनीय नहीं कह सकता है। वहां कहा गया है कि ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघा से वैश्य और पैरों से शूद्र पैदा हुए हैं। इसका तात्पर्य यही है कि ब्रह्मा के शरीर में सारा जन समुदाय समा सकता है तो फिर कमण्डलु में वनगज और तुम दो कैसे नहीं अट सकते थे? फिर यह भी कहा गया है कि जिस शिव-लिंग के आदि-अन्त का पता ब्रह्मा और विष्णु भी नहीं लगा सके थे उसी शिव के साथ उमा ने अपना वैवाहिक जीवन बिताया था। तो छोटे से कमण्डलु में महान् वनगज भी समा सकता था, यह बिलकुल अयुक्त नहीं है।'

'महाभारत में व्यासजी ने कहा है कि विराटराज को राणी को कोई सन्तान नहीं थी। उसने आश्रम में जाकर एक ऋषि की आराधना की जिनने उसे एक अभिमंत्रित चूर्ण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vimal Avdhi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
दिया और वंश-निकुंज (बांस के निकुंज) में बैठकर खाने का आदेश दिया और कहा कि उससे उसे सौ पुत्र प्राप्त होंगे। उसने वैसा ही किया और राजमहल में लौट आई। कालान्तर में गागलि ऋषि पहुँचे और उसी वंश-निकुंज में समाधि लगा कर तप करने लगे। निकट के ही एक सरोवर में स्नान करती हुई नग्न अप्सराओं की ओर वे एकदा काम-दृष्टि से इतने निहारते रहे कि उनके वीर्य का बूंद-बूंद पतन होने लगा जो वंश नलिका में गिरा। उससे सौ कीचक जन्मे जिन्हें रानी ने अपने पुत्र स्वीकार कर लिए। जब एक पतली-सी वंश-नलिका में १०० कीचक समा सके थे तो एक कमण्डलु में तुम और वनगज दो भी कैसे नहीं समा सकते थे ?

इसी प्रकार जब महादेव अपनी जटा में एक दिव्य वर्ष हजार तक गंगा को भुलाए रख सके तो एक कमण्डलु में छह महीने तक तुम्हारा वनगज को भुलाए रखना भी सत्य ही है।

हे मूलदेव ! तुम कमण्डलु की नलिका में से बाहर निकल गए और वनगज पूंछ का बाल फंस जाने से वहीं अटक गया सो भी अविश्वसनीय नहीं है। पुराणों में कहा है कि संसार के पालनहार विष्णु प्रलय काल में सागर की जल-शैया पर सोये हुए तप कर रहे थे। उस समय कमल पर बैठे हुए ब्रह्मा तो हाथ में कमण्डलु आदि लिये उनकी नाभि से बाहर निकल गए परन्तु कमल-नाल उनकी नाभि में अटका ही रह गया। यह सत्य है तो कमण्डलु नलिका से तुम्हारा बाहर निकल जाना परन्तु वनगज की पूंछ बाल फंस जाने से उसका वहीं अटक जाना भी असत्य नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महाभारत में कहा गया है कि जब ब्रह्म को एक दिव्य वर्ष हजार तप करते-करते हो गए तो देवगण बड़े चिंतित हुए और उसके तप भंग का उपाय सोचने लगे। इन्द्र ने उस समय देवों से कहा कि गौतम, वशिष्ठ, पाराशर, जमदग्नि, काश्यप, अगस्त्य, इन्द्र, हरि और हर सभी स्त्री से पराजित हुए हैं। एक वीतराग देवाधिदेव श्री महावीर पर ही स्त्री शक्ति का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा था। एक समय महेश ने अग्नि कर्म करते हुए वस्त्र उठाए खड़ी पार्वती को देख लिया। वे तुरन्त इतने कामातुर हो गए कि उनका वीर्य क्षरित हो गया। वीर्य क्षरित वस्त्र को झटकते हुए उसका एक बिन्दू पास में पड़े कलश में जा गिरा कि जिससे सुप्रसिद्ध द्रोणाचार्य उत्पन्न हुए। इसलिए ब्रह्मा का तप खण्डित करने के लिए उनके पास तिलोत्तमा अप्सरा को भेजना चाहिए। इन्द्र की आज्ञा से जहां ब्रह्मा तप कर रहे थे तिलोत्तमा खूब सजधज और बन ठन कर गई और चम्पक पुष्प के समान अपने प्रत्येक कामांगों को चलाती और दिखाती वहां नाचने लगी। सामने नाचती हुई तिलोत्तमा को जब एक टक ब्रह्मा देखने लगे तो उसने उनके दक्षिण पाश की ओर नाचना शुरू कर दिया। राग से उसका नृत्य देखते और उसके एक दिशा से दूसरी दिशा में घूम जाने के कारण, ब्रह्मा ने चारों दिशा में चार मुख विकसित कर लिये। जब तिलोत्तमा उर्ध्व दिशा में नृत्य करने लगी तो ब्रह्मा ने पांचवां मुख मस्तक में विकसित किया। ब्रह्मा को इस प्रकार काम विचलित देखकर रुद्र ने वह पांचवां मुख उखाड़ कर फेंका जो उनके हाथ में चिपका ही रह गया। परंतु ब्रह्मा

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
इससे बड़े विचलित और क्रोधित हो गए। उनके भाल पर पसीना ही पसीना हो गया। उसे पूंछते हुए जो प्रस्वेद बिन्दू-नीचे गिरी उससे श्वेतकुण्डली नाम का पुरुष उत्पन्न हुआ और उसने ब्रह्मा की आज्ञा से शंकर-रुद्र-ईश्वर का पीछा किया। रक्षा पाने के लिए शंकर बद्रिकाश्रम में तप कर रहे विष्णु के पास पहुँचे और भिक्षा की याचना की। विष्णु ने अपने ललाट की रुधिर-शिरा खोल दी। उससे निकल रहे रुधिर को शंकर ब्रह्मा के उस मुंड-खप्पर में लेने लगे कि जो उनके हाथ में था। परंतु वह खप्पर एक दिव्य वर्ष सहस्र तक में भी रक्त से भर नहीं पाया। जब शंकर ने उसमें अपनी अंगुली डुबोई तो ब्रह्मा का मस्तक (खप्पर), विष्णु का रक्त, और शंकर की अंगुली, तीनों के संयोग मिलने पर उस खप्पर में से रक्तकुण्डली नामक पुरुष निकला जो शंकर की आज्ञा से श्वेतकुण्डली से जूझ पड़ा। दोनों को जूझते हुए भी एक दिव्य वर्ष सहस्र हो गया पर कोई किसी को हरा नहीं सका। तब देवों ने उनका युद्ध यह कहकर बंद करा दिया कि जब भारत में महाभारत युद्ध हो तब अपनी यह लड़ाई चालू रखने के लिए उसमें लड़ने को तुम्हें भेज दिया जाएगा। जब भारतकाल प्रवर्तित हुआ तो सूर्य कुंती के रूप पर मोहित हो गया और फलस्वरूप वह गर्भ-वती हो गई। उस गर्भ में रक्तकुण्डली अवतीर्ण हुआ और समय आने पर जब कान से कुंती ने गर्भ प्रसव किया तो उस पुरुष का नाम कर्ण रखा गया। जब कर्ण का जन्म कान से हो सका था तो फिर तुम कमण्डलु की नालिका से कैसे नहीं निकल सकते थे ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Bhuvan Vani Trust Donations

जो तुम यह कहते हो कि कैसे समर्थ जलवाली वेगवती गंगा को भुजाओं से तैर कर कैसे पार किया तो रामायण में क्या यह नहीं कहा गया है कि रामचन्द्रजी की आज्ञा से पवनसुत हनुमत अपनी बाहुओं से समुद्र को तैर कर लंका पहुँचे थे और सीता के प्रश्न पर उनने यही उत्तर दिया था कि—

तव प्रसादात् पवनप्रसादाद मर्तुश्च तो देवि ततः प्रसादात् ।
तिमिः प्रसादेरनुगम्य सोयं तोर्णो मया गोष्पदवत् समुद्रः ।।

जब हनुमत समुद्र को भी भुजा से तैर कर पार हो गए थे तो तुम्हारा गंगा को तैर कर पार करना कैसे अयुक्त है ?

यह कि तुम गंगा को छह महीने तक अपने सिर पर कैसे लिये रहे सो यह भी अयुक्त नहीं है, क्योंकि श्रुतियों में कहा है कि देवों ने लोक हितार्थ गंगा माता को मनुज लोक में जाने की जब प्रार्थना की, तो उत्तर में गंगा ने प्रश्न किया था कि मुझे आकाश से गिरते हुए धारण कौन करेगा । शंकर ने धारण करने का वचन दिया और जब गंगा आकाश से उतरी तो उन्होंने उसे मस्तक पर धारण कर लिया । जब शंकर एक दिव्य वर्ष सहस्र तक गंगा को मस्तक में धारण करते रहे तो तुम जैसा गुणवंत महापुरुष छह महीने ही उसे मस्तक पर धारण कैसे नहीं कर सकता है ? इसलिए तुम सत्य ही बड़े बुद्धिमान और महिमावान हो ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मूलदेव ने तब कुण्डरीक को कहा, 'तुमने जो देखा, सुना और अनुभव किया हो, सो अब कहो ।' कुण्डरीक कहने लगा कि मैं बचपन में बड़ा नटखट था । इसलिए माता पिता ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया । भटकता-भटकता मैं सीमान्त पर के एक धनी नगर में पहुँच गया । वहाँ वटवृक्ष के नीचे कमलदल नामक एक यक्ष रहता था जो बड़ी अलौकिक शक्तिवाला था । पूजने मानने वालों को वह वांछित फल दिया करता था । जब मैं पहुँचा तो उसका उत्सव मनाया जा रहा था जिसमें गांव के लोग सजे धजे धूम धाम से अनेक खेल-कूद करने में निमग्न थे । मैं भी यक्ष के दर्शन कर लोगों के खेल-कूद और उत्सव समारोह में सम्मिलित हो गया । यकायक अस्त्र-शस्त्र से पूर्ण सज्जित लुटेरों के एक दल ने धावा बोल दिया । उत्सव मनाने वाले हम सब लोग डर कर, अपने ढोर-डंगर एवम् घोड़ों आदि सहित भाग कर वहां पड़े एक चीमड़ कद्दू में घुस गए । हम सब का खेल-कूद, नाचगाना, वहां भी वैसा ही चलता रहा । गांव को एक दम खाली देख कर यह कहते हुए कि गांव लोप हो गया, लुटेरे लौट गए । फिर उधर चरता हुआ बकरियों का एक एवड़ आया और उसमें से एक वह चिमड़ कद्दू खा गया । उस बकरी को एक अजगर खा गया और अजगर को एक ढिंक-सारस जाति का एक पक्षी-निगल गया और उड़ कर पास के वट वृक्ष की एक डाल पर जा बैठा । उस वट वृक्ष के नीचे पड़ाव डाले हुए एक राजा ससैन्य ठहरा हुआ था । ढिंक की लम्बी टांग को

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
वट-वृक्ष की शाखा समझ कर पड़ाव डाले हुए राजा के एक महावत ने उससे एक मत्त गज को बांध दिया। जब ढिंक ने अपनी टाँग ऊपर खींची, तो उससे बंधा हुआ गज भी उसी के साथ ऊपर चीखता चिल्लाता हुआ ऊठा लिया गया। महावत तब ज़ोरों से यह चिल्लाता हुआ कि कोई उसके हाथी को ही उड़ाए लिये जा रहा है, राजा के पास दौड़ा। उसका कोलाहल सुन शब्दभेदी शस्त्र के चालक अनेक सुभट दौड़े हुए आए और उनने उस ढिंक पक्षी के मस्तक पंख आदि इतने छेद दिए कि वह मर गया और भूमि पर आ गिरा। राजा ने तब उसका पेट चिरवाया जिसमें एक अजगर मिला। अजगर का पेट चिरवाने पर उसमें से एक बकरी और बकरी का पेट चिरवाने पर उसमें से एक चिमड़ कद्दू निकला। जब वह कद्दू चिरवाया गया तो उसमें से मुझ सहित गांव के ढ़ोर-डंगर, घोड़े आदि और लोग खेलते कूदते और खेल के डंडे आदि हाथ में लिए निकले। राजा को प्रणाम करके सब लोग अपने-अपने घर को चले गए और मैं वहाँ से इस उज्जैन नगरी को आ गया। यह सब मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया है। यदि इसे सच नहीं मानते हैं तो सारी मण्डली को शीघ्र ही भोजन करा दीजिए, अन्यथा ग्रन्थों से प्रमाण देकर इसको सत्य प्रमाणित करिए।

उक्त चुनौती सुन कर तीसरा धूर्त-नायक एलाषाढ़ जिसने महाभारत, रामायण और पुराणादि का गहन अध्ययन किया था, इस प्रकार कहने लगा, 'जो कुछ कुण्डरीक ने अभी कहा है, निःसंदेह ही सब विश्वसनीय है। क्या आपने विष्णु पुराण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं सुना है ? उसके अनुसार सृष्टि की आदि में जब कि पंच महाभूत अस्तित्व में ही नहीं आए थे, सर्वत्र महासागर ही महासागर व्याप्त था और उसकी उत्ताल लहरों पर एक अंडा चिरकाल से अथड़ाता एकदा समान भागों में दो टुकड़े हो गया। उसका एक अर्धांश हमारी यह पृथ्वी हुई। जो अंडे के अर्धांश में सब देवता, नारकी, तिर्यंच और मनुष्य समा सके थे तो चीमड़ कद्दू में एक छोटा समूचा गाँव भी क्यों नहीं अट सकता है ?

"फिर महाभारत के अरण्यपर्व में मारकण्डेय ऋषि धर्मराज युधिष्ठिर से अपना अनुभव इस प्रकार कहते हैं कि प्रलय काल में जब कि चहुं ओर जल ही जल था और यह सृष्टि समस्त जीवित प्राणी रहित थी, एक अत्यंत ऊंचा और अनन्त विस्तार वाला वट वृक्ष उस अथाह सागर में दिखलाई पड़ा कि जिसकी शाखाओं पर बिछी शय्या पर एक रूपनिधान बालक बैठा था। इस डर से कि यह बालक कहीं बाढ़ में डूब नहीं जाए, मैंने उसे उठा लेने के लिए अपने हाथ फैलाए। परन्तु जब उस बालक के उदर में जंगलों, पहाड़ों वाली सारी की सारी सृष्टि ही देखी तो मैं उस उदर में ही प्रवेश कर गया। एक दिव्य वर्ष सहस्र तक घूम कर भी मैं उस बालक के उदर के अन्त का पता ही नहीं लगा पा सका और इसलिए बाहर निकल आया। यदि एक शिशु के उदर में सुरासुरादि वाला यह समस्त जगत समाया हुआ था तो चीमड़ कद्दू में एक गांव क्यों नहीं अट सकता है ?

"तुम जो यह कहते हो कि ढ़िक पक्षी के पेट में अजगर,

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
अजगर के पेट में बकरी, बकरी के पेट में चीमड़ कद्दू और उस कद्दू में पशु और मनुष्य सहित सारा गांव कैसे अटा गए थे सो क्या तुम नहीं जानते कि देवकी की कमर इतनी पतली थी कि वह मुट्ठी में अट सकती थी। परन्तु उस पतली कमर की कोख में ही तो कृष्ण रहा था कि जिसके उदर में विश्व का विश्व ही समाया हुआ था। इसलिए ढिंक पक्षी के पेट में अजगर, अजगर के पेट में बकरी, और बकरी के पेट में कद्दू और कद्दू में सारे गांव का अटाना कैसे असत्य हो सकता है ?"

"अगर तुम पूछते हो कि चीमड़ कद्दू में रहते गांव के पशु, पक्षी और मनुष्य मर कैसे नहीं गए सो वासुदेव के उदर में कृषि, व्यापार, युद्धादि करती और विवाहादि उत्सव मनाती यह सृष्टि जीवित रही थी तो तुम भी गांव के पशु, पक्षी और समस्त जनता के साथ जीवित रह सकते थे। कृष्ण के उदर में यह जग कैसे अटा रहा सो एकदा ब्रह्मा और कृष्ण में वाद विवाद चल पड़ा, फिर ब्रह्मा कहने लगे कि चूंकि मेरे मुख, खोहु, उरु और पाद से अनुक्रम से चार वर्ण उत्पन्न हुए है, इसलिए सृष्टि का कर्ता मैं हूँ। इस पर कृष्ण ने कठोर होते हुए उत्तर दिया कि हे ब्रह्मा ! तुम तो मेरे चेट-दास हो। इस प्रकार बोलते हुए तुम लजाते क्यों नहीं हो ? यह पृथ्वी और आकाश तो मेरे मुख का कोटर है। पर्वत डाढें और समुद्र जिह्वा है। यदि आवश्यक हो तो मेरे उदर में प्रवेश करके ही तुम देख लो कि वहां सारी सृष्टि अटी हुई है या नहीं। मेरी नाभि कमल से उत्पन्न तुम इस प्रकार बोलो, यह उचित नहीं है। कहा है कि—

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जस्स पमावेणम्मिल्लियाइं त चेव कह कयाघाई ।
कुभुआइं अत्तसंभाविआइं चंदं उवहसंति ।।

जब कण्डरीक ने कहा,—'क्या ढिंक पक्षी इतना मोटा किसी ने सुना है कि उसके पेट में अजगरादि सब अटा जाए ?' तो उत्तर देते हुए एलाषाढ़ बोला,' हे भाई । द्रौपदी के स्वयम्वर मण्डप में एक धनुष में पर्वत, सर्प, अग्नि आदि समाये हुए थे, यह तुमने नहीं सुना है ? राजा द्रुपद ने घोषणा की थी कि जो मेरे देवताधिष्ठित धनुष को चढ़ा कर राधावेध करेगा, उसको ही यह द्रौपदी ब्याहेगी । घोषणा सुन कर अनेक राजा लोग स्वयम्वर में आए । परन्तु कितने ही धनुष को चढ़ाते हुए गिर पड़े जिससे लोगों में उनकी खूब ही हंसी हुई । जब महामानी शिशुपाल धनुष को चढ़ाने को उठा तो कृष्ण ने मेरू पर्वत, गज, गरुड़ आदि का भार उस धनुष पर इसलिए और डाल दिया कि शिशुपाल उसे नहीं उठा सके । और तब भी शिशुपाल द्वारा वह धनुष अर्धांगुल प्रमाण ही असंधित रहा था कि कृष्ण ने पैर से टल्ला दे दिया और शिशुपाल धनुष सहित भूमि पर तुरंत ही लुढ़क गया । अब अर्जुन ने धनुष को हाथ लगाया । धनुष का भार पृथ्वी तक को असह्य हो रहा था । इसलिए भीम के हाथ का सहारा ले कर ही अर्जुन भी उस धनुष को चढ़ा राधावेध करने में सफल हुआ एवम् द्रौपदी को वह ब्याह लाया । कहने का तात्पर्य इतना ही है कि वह धनुष इतना मोटा था कि उसमें मेरू पर्वतादिक भी समा सके थे । इसलिए ढिंक पक्षी का पेट

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
भी इतना मोटा हो सकता है कि उसमें अजगरादि अटा सके थे।"

रामायण में भी कहा गया है कि सीता को हर कर ले जाते हुए रावण के साथ जटायु ने अपने पंखों से युद्ध किया था जिन्हें रावण ने काट दिया और जटायु भूमि पर गिर पड़ा जहां वह मंदार पर्वत जितना महान् दीखता था। सीता ने उसे तब आशीर्वाद दिया कि मेरे शील की महिमा से रामचंद्र के दूत के दर्शन करते ही तेरे पंख फिर से आ जाएंगे। कितने ही काल बाद रामचन्द्र को आज्ञा से सीता की खोज करते हुए हनुमत उधर पहुँचा। भूमि पर पड़े जटायु को पर्वत समझ उस पर चढ़ चारों ओर की टोह लेने के लिए वह उसके निकट गया। यह सुन कर कि हनुमत रामचन्द्रजी का दूत बन कर सीता का समाचार लाने के लिए जा रहा है, जटायु ने उसे सूचित कर दिया कि सीता को तो रावण लंका में ले गया है। सीता की मुक्ति के लिए युद्ध करते समय पंख काट कर मुझे उसी ने भूमि पर गिरा दिया था। इस प्रकार के समाचार सुन कर हनुमत ने जटायु को आशीर्वाद दिया कि "तूने सीता के लिए युद्ध किया और मुझे सीता का समाचार कहा, इसलिए तेरा भी भला हो।' इस आशीर्वाद के सुनते ही जटायु के पंख फिर से आ गए और वह उड़ कर तुरंत स्वर्ग में चला गया। जो जटायु पक्षी पर्वत समान था तो तुम्हारा ढ़िक पक्षी भी पर्वत समान बड़ा क्यों नहीं हो सकता है? इसलिए हे कण्डरीक! तुम्हारे अनुभव तो बिलकुल सत्य ही हैं।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एलाषाढ़ का उत्तर सुन कर कण्डरीक कहने लगा, कि 'हे एलाषाढ़' अब तुमने जो देखा, सुना और अनुभव किया हो, वह सब को कह सुनाओ।' तब एलाषाढ़ इस प्रकार कहने लगा, "मैं यौवनावस्था में धन प्राप्ति के लालच की सिद्धि के लिए सुवर्ण सिद्धि आदि रसों विद्याओं के लिए बहुत घूमता रहता था। जब भी कोई नई सूचना पाता मैं खोज में उधर ही निकल पड़ता था। इस तरह जब घूम रहा था तो मुझे किसी ने कहा कि पूर्व दिशा में सहस्र योजन दूर एक पर्वत है वहां सहस्रवेधी रस है। उस पर योजन प्रमाण लम्बी चौड़ी शिला ढकी है जिसे उठा कर ही स्वर्ण कुण्ड से वह रस लिया जा सकता है। इसलिए मैं वहां गया और शिला को उठा, स्वर्णकुण्ड से रस ले, उस बिल को पीछा शिला से ढक कर घर लौट आया। उस रस से तब मैंने बहुत सोना बनाया और कुबेर के समान धनी हो गया। उस धन से मैंने खूब ही तो ऐशो आराम किया और दान भी खूब ही दिया। इससे मेरी और मेरे धन की चहुँ ओर खूब प्रख्याति हो गई। मेरी ऐसी ख्याति सुन कर एकदा मध्य रात्रि के समय अकस्मात् पांच सौ चोर लुटेरे मेरे घर आ गए और लूट पाट करने लगे। मेरे जीवित रहते मेरा धन लूट और चुरा कर वे कैसे ले जा सकते हैं, यह सोच कर मैं शस्त्रादि ले कर साहस के साथ उनका सामना करने लगा और एक एक तीर से दस दस चोर लुटेरों को मार गिराने लगा। तब तो सब चोरों ने मिल कर मुझ पर एक साथ ही धावा बोल दिया

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
और मेरा सिर काट कर पास के ही बोरड़ी के वृक्ष पर लटका मेरा सारा धन ले कर वे चले गए । लटकता हुआ मेरा सिर उस बोरड़ी के बेर खाने लगा । प्रातःकाल सूर्योदय होने पर लोगों ने मेरे सिर को बेर खाता देखा तो मुझे जीवित समझ, मेरे सर्व अंगोपांगों को यथारूप मिलाकर मेरा सिर उस शरीर पर रख दिया । फलस्वरूप मैं तुरंत ही पहले से भी अधिक रूप लावण्य शरीर वाला हो गया । यह मेरा अनुभव है और मैं जीता जागता तुम्हारे सामने उपस्थित ही हूँ । यदि इसे झूंठ मानते हो तो सारी मण्डली को तुरत भोजन कराने का प्रबन्ध करो और सत्य समझते हो तो इसके शास्त्रों के प्रमाण दो ।

एलाषाढ़ के अनुभव सुन कर चौथा धूर्त-नायक शश कहने लगा कि यह अनुभव तो बिलकुल विश्वस्त है । इसे असत्य कौन कह सकता है ? रामायण, महाभारत और पुराणों में ऐसे अनेक वृत्त दिए हैं जो मैं तुम्हें सुनाता हूँ । पूर्व काल में जमदग्नि नाम के एक ऋषि थे जिनके रेणुका नाम की पत्नी थी । उसके शील के प्रताप से वृक्ष असमय में हो फूलते और फलते थे । एक बार अश्वापहुत नाम के राजा को देख कर रेणुका उस पर मोहित हो गई । उसके इस प्रकार पतित हो जाने से वृक्षों का असमय में फलना फूलना बंद हो गया । यह देख कर ऋषि ने अपने पुत्र परसुराम को कहा कि इस पापिणी रेणुका का मस्तक काट लो । परसुराम ने तत्काल माता का मस्तक काट लिया । परसुराम के इस प्रकार तत्काल आज्ञा पालन से संतुष्ट होकर जमदग्नि ऋषि ने उसे वर मांगने के लिए कहा । 'मेरी माता जीवित हो जाए'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ऐसा वर परसुराम ने मांग लिया। ऋषि के तथास्तु कहते ही रेणुका जीवित हो गई। जो यह सत्य है तो हे एलाषाढ़! तुम्हारा फिर से जीवित हो जाना कैसे असत्य हो सकता है?"

यह भी तो कहा जाता है कि दो टुकड़ों को जोड़ कर जरा राक्षसी द्वारा सांधा हुआ जरासंघ राजा सहस्र राजाओं का स्वामी था। और सुनो! सुंद और निसुंद नाम के दो दैत्य थे। देव उनसे बहुत ही तंग आ गए थे और जैसे भी हो उनका नाश चाहते थे। इसलिए उनने अपने शरीरों से तिल तिल समान भाग ले कर सर्वांगसुंदराकार, लावण्यनिधान तिलोत्तमा नाम की अप्सरा का निर्माण किया और उसे आदेश दिया कि वह दोनों दैत्यों का जैसे भी हो वैसे ही नाश कर दे। तब तिलोत्तमा ने हाव भाव और विभ्रम विलास द्वारा उन दोनों ही को अपने ऊपर इतना मोहित कर लिया कि कामांध हुए हुए वे दोनों आपस में लड़ कर कट मरे। कहा है कि—

स्त्रीणां कृते भ्रातृयुगस्य भेदः संबन्धिभेदे स्त्रिय एव मूलम्।
अप्राप्तकामा बहवो नरेन्द्रा नारोमिरुच्छेदितराजवंशाः॥

जब देवताओं के तिल मात्र शरीर अंशों से तिलोत्तमा जैसी सर्वांगसुन्दरी अप्सरा उत्पन्न हो सकती है तो तुम्हारे हो छेदे हुए अंगोपांगों को मिलाने पर तुम कैसे नहीं जीवित हो सकते थे।

और भी सुनो! पवनपुत्र हनुमत ने बाल्यावस्था में अपनी माता से पूछा कि हे माता! मुझे भूख लगे तब मैं

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
क्या खाऊं ? माता ने उसे लाल फल खा लेने को कह दिया। एक समय उगते हुए सूर्य के लाल रंग से उसे लाल फल समझ कर खाने के लिए पकड़ने को हनुमत ऊपर उछले। जब पीछे गिरे तो उनका शरीर शत शत खंड हो कर चूर्ण हो गया। हनुमत की इस प्रकार की मृत्यु और उसकी माता अंजना को विलाप करने देख कर उसके पिता पवन अत्यन्त क्रुद्ध हो पाताल लोक को चले गए। तब मनुज और देव लोक दोनों में पवन के निरोध से केवल हा हा कार ही नहीं मच गया अपितु लोग धड़ा धड़ मरने भी लगे। देव तब पाताल लोक में गए और पवन को लौटा लाने में सफल हो गए। इधर हनुमत के छिन्न हुए अंगों को एकत्र किया गया और वह भी जीवित हो गया। परन्तु उसकी ठोडी-हनु ढूंढ़ने पर भी जब कहीं नहीं मिली तो उसे हनुमत नाम दे दिया गया। यदि यह सत्य है तो फिर तुम्हारा कथन असत्य क्यों है ?"

रामायण भी तो कहती है कि राम रावण का जब लंका में घमासान युद्ध हो रहा था तो रावण के सुभटों द्वारा वानरों के सैंकड़ों छिन्नांग किए गए। उसी युद्ध में रावण के शक्ति बाण से लक्ष्मण जब आहत हो भूमि पर गिर पड़े तो राम शोक विह्वल हो घोर विलाप करने लगे। हनुमत उस समय द्रोणगिरी को गए और विशल्या जड़ी वाला सारे का सारा वह पहाड़ ही उठा लाए। उस जड़ी से न केवल लक्ष्मण ही जीवित हो गए अपितु वे सब वानर भी कि जिनके अंगोपांग छिन्न छिन्न कर दिए गए थे। इसलिए हे एलाषाढ़ ! तेरा फिर से जीवित हो जाना किंचिन्मात्र भी असत्य नहीं है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

हे एलापाढ़ ! क्या तुमने एक थी उत्पत्ति कथा नहीं सुनी है ? यह तो पुराणों की एक बहुत ही प्रसिद्ध कथा है। हिमालय की कंदरा में ईश्वर-शंकर को पार्वती के साथ संभोग करते हुए एक दिव्य वर्ष सहस्र हो गए थे। इधर देवों को तारकासुर नामक दैत्य बहुत ही पीड़ा दे रहा था। उसे मारने का उपाय सोचते हुए वे इस निश्चय पर पहुँचे कि शंकर पार्वती का संभोग बंद कराने से ही इस दैत्य से छुटकारा मिल सकता है। और यह काम एक मात्र अग्निदेव ही कर सकता है दूसरा नहीं। परन्तु अग्नि देव इसके लिऐ तैयार नहीं था क्योंकि शिव के कोप से वह डरता था। अंत में इन्द्र ने अग्नि को आश्वस्त करते हुए कहा कि शिव तो उमा –पार्वती के वश में है। जिस शिव को और कोई वश में में नहीं कर सकता था, उन्हें पार्वती-एक स्त्री ने एक ही दिन में वश कर लिया है। कहा भी है कि—

हत्थी दम्मइ संवच्छरेण मासेण दम्मइ तुरंगो।
महिला पुण किर पुरिसं दमेह इक्केण दिवसेणं॥

उस समय पार्वती जैसा शिव से कहेगी, वे वैसा ही करेंगे। जो ईश्वर-शंकर तेरे पर कुपित भी हो जाएंगे तो पार्वती का मन रखने को तेरे शरीर पर वे कोई भी उपद्रव नहीं कर सकेंगे।

इस प्रकार आश्वस्त किए जाने पर अग्नि देव उस हिमालय कन्दरा में गया जहां कि शंकर पार्वती संभोग कर रहे थे। अग्नि को विघ्न करने आया देख कर शिव-शंकर एक

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
दम क्रुद्ध हो गए। पार्वती के मना करने पर भी शंकर-ईश्वर ने अग्नि को अपना वीर्य पीने के लिए बाध्य किया। वीर्य के ताप से अग्नि तब खूब ही धधक उठी। शांति के लिए वह सागर की ओर दौड़ा और वहां वीर्य का वमन कर देने पर ही कुछ कुछ शांत हुआ। कहा जाता है कि इसी वीर्य वमन से समुद्र में रत्नों की उत्पत्ति हुई। फिर भी थोड़ासा वीर्य अग्नि के पेट में रही गया था और उसे उसने पद्म सरोवर में जा कर वमन किया। उस समय वहां कृत्तिका नाम की छह-अप्सराएं स्नान कर रही थीं। वमन किया हुआ वीर्य उनकी योनियों में प्रवेश कर गया और वे सभी गर्भवती हो गई। गर्भकाल बीतने पर उनने क्रमशः बाहु, हृदय, रुंड, मुंड, शरीर आदि छह अंगों को पृथक २ प्रसव किया और जब उनने भिन्न भिन्न प्रसव किए अंगों को एकत्र किया तो उन्हें पारे के समान एकत्र होते देख कर वे सब चकित रह गईं और उससे छह मुख वाला स्कंध नामक पुरुष उत्पन्न हो गया। उसने युद्ध में तारकासुर को परास्त किया। जो पृथक-पृथक स्त्रियों से अंगों से छह मुख वाला महासेन स्कंध उत्पन्न हो सका तो एक स्त्री से उत्पन्न तेरे अंग मिल कर तेरा जीवित हो जाना कैसे असत्य हो सकता है?

एलाषाढ़ तेरा मुंड बेर कैसे खा रहा था तो क्या कृष्ण के चक्र से छेद किया राहु का मुंड आकाश में सूर्य और चन्द्र को ग्रसता नहीं है? यह सत्य है तो तेरा मुण्ड का बेर खाना भी सत्य है।

मार्ग चलते हुए तूने एक ही कदम में सौ योजन पृथ्वी उलांघी सो भी असत्य नहीं है क्योंकि विष्णु ने भी तो

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ब्राह्मण का रूप धर कर राजा बलि से केवल तीन कदम दान मांगी भूमि में सारी सृष्टि ही लांघ या नाप ली थी। इसी तरह तेरे सौ योजन लंबी चौड़ी शिला उठाने और देखने की बात भी माननीय है क्योंकि रामायण में ही तो कहा गया है कि जब रावण की शक्ति से लक्ष्मण मूर्छित हो कर पड़ गए तो उनकी चिकित्सा के लिए विशल्या औषधि वाला द्रोणपर्वत सारा का सारा ही हनुमत उठा लाए थे। यही क्यों, विष्णु ने भी तो वाराहावतार में पर्वतों, वृक्षों आदि से भरी पूरी सारी पृथ्वी को उठाया था।

इसलिए हे एलापाढ़! तुम्हारे अनुभव तो सभी सत्य हैं।

चतुर्थ आख्यान

तदनन्तर चतुर्थ-धूर्तनायक शश अपने अनुभव सुनाने लगा। उसने कहा कि मेरे खेत किसी एक पर्वत के पास थे। एकदा शरद्ऋतु में मैं अपने खेतों पर गया हुआ था। वहां एक मत्त वनगजराज पर्वत से उतर कर मुझे मारने को दौड़ा। उससे बचने का स्थान ढूंढ़ते २ मुझे एक अति मोटा तिल वृक्ष दीख पड़ा। मैं तत्काल उसी पर चढ़ गया। गजराज ने वहां से मुझे गिराने का बारम्बार खूब ही प्रयत्न किया। तिल-वृक्ष को उसने खूब ही झिंझोड़ा। उसके कितने ही तिल पुंज नीचे झड़ गए जिन्हें उस गजराज ने खूंद खूंद कर घाणी में पीलने की तरह पील कर तेल निकाल दिया। इससे वहां तेल की नदी ही बह गई। उस तेल से हुए गहरे और चिकने कीचड़ में वह गजराज एक दम फंस गया और भूखा-प्यासा तुरन्त

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
ही मर गया। राजा ने मुझे बुला कर नया तिल-वृक्ष से नीचे उतरा। हाथी का चमड़ा उतार कर उससे एक बड़ी पखाल मैंने बनाई। दस घड़े तो मैंने तेल पिया और एक भार भर तिल-खली खाई। फिर उस पखाल को तेल से भर, कंधे पर उठा अपने गांव तक लाया और गांव की सीमा के एक वृक्ष की छांह में उसे रख कर घर चला गया। मैंने अपने पुत्र को वह तेल भरी पखाल घर ले आने को भेजा। उसे पखाल वृक्ष के नीचे पड़ी हुई दिखाई नहीं दी, इसलिए वह वृक्ष को ही उखाड़ कर सब लोगों के देखते हुए घर पर ले आया। मैं अपने घर से सीधा यही आया हूं। मैंने यह सब प्रत्यक्ष अनुभव किया है। जो इसे असत्य मानते हो तो सब मण्डली को भोजन दो।

शश का अनुभव सुन कर सर्व-कला-प्रवीण खण्डपाना धूर्ता बोली, हे शश ! तुमने जो कहा वह सब तो महाभारत, रामायणादि में पहले से ही लिखा हुआ है। पाटलिपुत्र में माष-उड़द वृक्ष की लकड़ी से एक बड़ा ढोल बनाया गया था यह लोक प्रसिद्ध है। तो तुम्हारा तिल वृक्ष भी इतना मोटा क्यों नहीं हो सकता है ? फिर महाभारत में कहा है कि हाथियों के मद झरने से एक महानदी ऐसी बन गई थी कि जिसमें हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल सभी डूब गए। कहा है कि—

तेषां कटतटभृष्टेर्गजानां मदबिन्दुभिः।
प्रावर्तते नदी घोरा हस्त्यश्वरथवाहिनी ।।

इसलिए तेरी कही तेल की नदी भी बह सकती है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Sarvahitkari Sabha Bhuvan Vani Trust Donations

फिर यह भी कहा जाता है कि भीम ने एकचक्रपुरी में जा कर बक राक्षस को मारा था। उस राक्षस के खाने के लिए एक महिष, सोलह खारी अन्न और हजार घड़े मद्य जो लाया गया था, वह सब भी भीम ने खा पी लिया था। जो यह सत्य है तो तेरा दस घड़े तेल पीना और एक भार खली खाना भी सत्य ही है।

रामायण कहती है कि कुम्भकरण जब सो कर उठता था तो एक हजार घड़े मद्य पिया करता था तो तेरे दस घड़े तेल पीना भी सम्भव है। अगस्त्य ऋषि ने समुद्र पी लिया, जाहनु ऋषि ने शंभु की जटा से निकल कर बहती हुई गंगा को आश्रम के बीच से निकलती हुई पी ही नहीं लिया था अपितु अपने उदर में एक हजार वर्ष तक वे उसे रखे भी रहे थे। इसलिए तेरा दस घड़े तेल पीना भी सत्य है।

हे शश ! जो तुम यह पूछते हो कि मैंने बड़े जंगी हाथी के चमड़े की तेल भरी पखाल कैसे उठाई और उसे अकेले गांव तक कैसे ले गया सो उसमें भी कोई आश्चर्य नहीं है। क्या तुमने गरुड़ाख्यान नहीं सुना है ? उसके अनुसार काश्यप ऋषि को कद्रू और विनता नाम से दो पत्नियां थीं। उन दोनों ने खेलते हुए एकदा ऐसी होड़ लगाई कि जो हारे वह दूसरी की आजन्म दासी रहे और उसका ही अंगजात पुत्र पाताल लोक से जब अमृत लावे तो वह उस दासत्व से मुक्ति लाभ करे। जब दोनों ने खेलना प्रारम्भ किया तो विनता हार गई। इसलिए वह कद्रू की दासी हो गई। कद्रू के विवाह

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
हो जाने पर उसको दासी रूप में उसके ही साथ जाना पड़ा। कद्रू ने उसे बहुत ही कष्ट दिया। दासता करते हुए भी विनता एकदा गर्भवती हो गई। समय समाप्त होने पर उसने तीन अंडे प्रसव किए। जल्दी से जल्दी अपना दासत्व दूर हो जाए इसलिए उसने एक अण्डा फोड़ा। उसमें से अपूर्ण बिच्छू निकले। बहुत काल पश्चात् उसने दूसरा अण्डा जो फोड़ा तो उसमें से जंघा रहित एक पुरुष निकला जिसने कहा, 'हे माता! तुमने पहली बार भी कच्चा अण्डा फोड़ दिया और इस बार भी कच्चा ही। इसलिए मैं भी अधूरा ही जन्मा हूं। इस तीसरे अण्डे को अब तुम पूरा पकने देना। यही तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेगा। तीसरा अण्डा इसलिए बहुत काल पश्चात् पकने पर ही फोड़ा गया। उसमें से सर्प-कुल का महाकाल महाबलवन्त गरुड़ पक्षी प्रकट हुआ। वह कद्रू के सर्प-पुत्रों को नित्य ही मारने लगा। वे सब माता कद्रू के पास जाकर रोते। और कद्रू विनता को शिकायत करते हुए कहती कि जो तू अपने पुत्र गरुड़ को वश में नहीं रखेगी तो तू बहुत दुःख पाएगी। विनता इसलिए रोने लगी। रोने का कारण पूछने पर विनता ने गरुड़ से कहा कि जो तू अमृत लाए तो ही मैं इस दासता से मुक्ति पा सकती हूं। अमृत मिलने का पता पूछने पर उसने कहा कि तेरे अंधे पिता ब्रह्मर्याश्रम में रहने वाले ही जानते हैं कि अमृत कहां मिलेगा? गरुड़ तब पिता काश्यप ऋषि के पास गया। पिता ने स्पर्श करके उसे पहचान लिया। गरुड़ ने तब पिता से कहा कि मैं भूखा हूँ। क्या खाऊं? काश्यप ऋषि ने कहा यहां पास में

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Siddhanta eGangotri Gyaan Bhuvan Vani Trust Donations
ही पद्म सरोवर है और उसमें बारह योजन शरीर वाले एक गज और एक कच्छप रहते हैं जो निरन्तर आपस में लड़ते हुए उस सरोवर को क्षुब्ध किया करते हैं। तू उन दोनों को खा ले और भूखा मत रह। तब गरुड़ ने वैसा ही किया। लौटते हुए मार्ग में पक्षियों से भरा हुआ उसने एक वटवृक्ष देखा। उस वट वृक्ष के नीचे ब्रह्मा के वीर्य से उत्पन्न बालखिल्य नाम के असंख्य ही ऋषि तप कर रहे थे। गरुड़ उस वृक्ष की एक शाखा पर बैठ गया। उसके शरीर के भार से वह शाखा कड़कड़ाती हुई टूट गई। नीचे तपस्या करते हुए ऋषि वृक्ष के इस तरह टूटने से मर नहीं जाए इस डर से उसने उस वट वृक्ष को समूचा ही अपनी चोंच में उठा देवों को चमत्कृत करता गगन में उड़ता हुआ रावण के लंका द्वीप में ले जाकर रख दिया। वहां उसने निषादों का भोजन किया। फिर लौट कर उसने अपने पिता काश्यप ऋषि से अमृत प्राप्ति का उपाय पूछा। ऋषि ने कहा कि सातवें पाताल में चारों दिशाओं में धगधगती अग्नि से परिवेष्ठित और सब सुरासुरों से रक्षित अमृत कुण्ड है। मधु, घृत और जल द्वारा अग्नि को संतुष्ट करने से ही उस अग्नि कुण्ड के पास जाया जा सकता है। और कदाचित् वहां से अमृत प्राप्त किया भी जा सकता है। गरुड़ वहां गया। अग्नि को संतुष्ट कर अमृत-घट लिये लौट ही रहा था कि शस्त्रास्त्र सज्जित सुरों ने उसका पीछा किया। दोनों में धमासान युद्ध हुआ। देवों के पलायन करने पर इन्द्र उनकी सहायता को आया। पर उसका वज्र भी गरुड़ पर सफलता प्राप्त नहीं कर सका। तब इन्द्र विष्णु के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinayasagar Sahib Bhandari Vani Trust Donations
पास गया। विष्णु को ही वाहन के पास गरुड़ को मारने को दौड़े। तब सभी ऋषियों और सूर्यादि ग्रहों ने विष्णु से प्रार्थना की कि आपको इस तरह गरुड़ का पीछा करना नहीं शोभता। बिना विचारे ही आप उस पर क्रोधित हो गए हैं। ऐसा आपको नहीं करना चाहिए। उन सब की प्रार्थना सुन कर विष्णु ने गरुड़ के साथ संधि कर लो और उसे अपना वाहन भी बना लिया। गरुड़ तब से विष्णु का ध्वज चिन्ह है। अमृत पाकर माता विनता दासत्व से मुक्ति प्राप्त हो गई। जो एक गरुड़ पक्षी इतना कर सका था तो तूं भी तेल भरी हाथी की पखाल उठा गांव तक कैसे नहीं ला सकता है ? फिर सात दिन तक कृष्ण ने लगातार घोर वर्षा होने के कारण गोवर्धन पर्वत को अंगुलि पर उठा रखा था तो गज पखाल तुम भी अवश्य ही उठा सकते थे।

जो समुद्र पर सेतु बांधने के लिए वानर गण अनेक योजन दूर से पर्वत खण्ड उखाड़-उखाड़ कर ला सके थे तो तेरा पुत्र भी वट वृक्ष को उखाड़ कर ले आया उसमें क्या अयुक्त है। अशोक वाटिका में हनुमत वानर द्वारा अशोक वृक्षों के जड़ से उखाड़ फैंकने की कथा सत्य है तो तेरे पुत्र के ऐसा कर लेने में कोई बड़ाई की बात नहीं है।

पंचम आख्यान

इस प्रकार खण्डपाना द्वारा निरुत्तर किए जाने पर शश ने खण्डपाना को अपने अनुभव कहने की कहा तो 'अत्थसत्थ-

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
णिझाया' अर्थात् अर्थशास्त्रोंमेंएवंनृ खण्डपाना कहने लगी कि 'यदि तुम दीन हो कर मेरे पैरों पर पड़ते हो तो मैं सब को भोजन देने को तैयार हूँ। ऐसा सुन कर सभी धूर्त बोल उठे, एक दिन के भोजन के लिए हम सब महापुरुष तेरे समक्ष दीनता स्वीकार नहीं कर सकने हैं।" उनके उत्तर को सुन कर कुछ-कुछ हंसते हुए खण्डपाना तब कहने लगी, "मेरे अनुभव अब आगे सुनो। मैं यौवनावस्था में रूपलावण्य निधान थी। एक समय ऋतुस्नान कर मैं मण्डप में सोती हुई थी तो पवन ने मुझ से संभोग किया। इसके फलस्वरूप मुझे पुत्र उत्पन्न हुआ और वह मुझ से उसी क्षण आज्ञा लेकर कहीं अन्यत्र चला गया। यदि यह सत्य है कि पवन इस प्रकार पुत्र उत्पन्न कर सकता है तो फिर कोई भी स्त्री इस संसार में वन्ध्या पाई ही नहीं जा सकती है।'

मूलदेव ने तत्काल इसका समर्थन करते हुए कहा कि महाभारत के अनुसार पवन ने कुंति से संभोग किया जिससे भीम पैदा हुआ था। इसी तरह पवन द्वारा भोग किए जाने पर अंजना ने हनुमान को जन्म दिया था। इसलिए तुम्हारे भी पवन संभोग से पुत्र होना सत्य है। अब जो तुम यह कहती हो कि मेरा यह पुत्र जन्मते ही मुझसे आलाप-संलाप करके अन्यत्र चला-गया सो धीवर कन्या मत्स्यगंधा और ऋषि पाराशर के संभोग से उत्पन्न व्यास ऋषि भी जन्मते ही अपनी मां से यह कह कर चले गए थे कि अवसर आने पर वह उन्हें स्मरण कर ले। वह मत्स्यगंधा पाराशर ऋषि के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
वरदान से फिर अक्षतयोनि हो गई थी और उसका विवाह शान्तनु से हुआ था जिससे विचित्रवीर्य पुत्र हुआ। परंतु वह निपुता ही मर गया। वंश ही नष्ट होने जा रहा है इससे डर कर उसने व्यास का स्मरण किया और उनने विचित्र-वीर्य की विधवा से तब तीन पुत्र उत्पन्न किए—पाण्डु, धृतराष्ट्र और विदुर। जब व्यास जन्मते ही अन्यत्र चले गए थे तो तुम्हारे पुत्र का जन्म लेते ही तुमसे आलाप-संलाप कर अन्यत्र चला जाना भी सत्य है।

फिर खण्डपाना ने कहा, 'एकदा मेरी सखि उमा ने देव दानव सभी को आकर्षित करने की मुझे विद्या दी। उससे मैंने सूर्य को आकर्षित किया और उसके संभोग से मेरे महा-बलवंत एक पुत्र पैदा हुआ। जिस सूर्य का प्रचण्ड तेज इस बयासी योजन प्रमाण पृथ्वी को ही तपा रहा है, उसके साथ संभोग करके भी मैं जीवित कैसे रही? जल कर मर क्यों नहीं गई? उत्तर में कण्डरीक ने कहा कि जब कुंति सूर्य के साथ संभोग करके नहीं जली तो तूं भी कैसे जल कर मर जाती?

तब खण्डपाना ने यह कहा, 'मैंने दूसरी बार अग्नि को आकर्षित किया और उसके साथ संभोग करके मैंने एक और महा तेजस्वी पुत्र उत्पन्न किया। परन्तु जिस अग्नि के स्पर्श मात्र से सब कुछ जल कर भस्म हो जाता है, उसके संभोग करते समय मैं भी जल कर भस्म क्यों नहीं हो गई? 'इसका उत्तर देते हुए एलाषाढ़ ने कहा, 'एक समय यम की स्त्री

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vidya Avashi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
धूमोर्णा होम देने के लिए अग्नि के पास गई थी वहां वह उसके साथ क्रीड़ा करने लग गई। क्रीड़ा करते हुए यम को उधर ही आता हुआ देख कर वह अत्यन्त भयभीत हो गई। उन दोनों का संभोग पूर्ण नहीं हो पाया था इसलिए अग्नि को धूमोर्णा ने निगल लिया। इधर यम भी धूमोर्णा को निगल गए और उसे निगले हुए ही वे देवताओं की सभा में भी चले गए। देवताओं ने वहां हंसते हुए उनसे तीनों का ही कुशल मंगल पूछा। इसलिए यम ने धूमोर्णा को वमन कर दिया और धूमोर्णा ने अग्नि को जो एक दम वन में भाग गया। परन्तु यम ने उसका वन में भी पीछा किया। वहां यम ने वनगजों से अग्नि की पूछ ताछ की, परन्तु उनने कुछ भी उसका पता नहीं दिया। इसलिए उनकी वाणी का अपहरण कर यम अपने घर लौट आए। जब यम की स्त्री धूमोर्णा अग्नि के साथ भोग करके नहीं भस्म हुई तो तुम ही क्यों भस्म हो जाती ?

खण्डपाना फिर कहने लगी कि मैंने एक समय इन्द्र को आकर्षित किया और उससे संभोग कर मैंने इन्द्र के समान ही पुत्र भी उत्पन्न किया। अप्सराओं को छोड़ कर इन्द्र मुझ मानवी के साथ भोग करे यह कैसे सम्भव है ? उत्तर देते हुए शश ने कहा, 'गौतम ऋषि की भार्या अहल्या से इन्द्र ने संभोग किया था। इससे अप्रसन्न हो कर ऋषि ने इन्द्र को सहसुभग हो जाने का शाप दे दिया था। इससे इन्द्र कामज्वर से सदा ही अत्यन्त पीड़ित रहने लगा। फिर देवताओं की विनीत प्रार्थना पर द्रवित हो कर ऋषि ने सहसुभग के

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
शाप को सहस्रनेत्र रूप में परिवर्तन कर दिया। इसी तरह इन्द्र ने कुंति से संभोग किया जिससे उसने अर्जुन को जन्म दिया। जो इन्द्र अहल्या और कुंति से संभोग कर सका, वह तुम जैसी रूपवती स्त्री से संभोग कैसे नहीं कर सकता है ?"

अब खण्डपाना ने धूर्त-नायकों से पूछा, "क्या तुम मेरा नाम, गोत्र, देश और मायावीपन सब कुछ जानते हो ?"

उत्तर देते हुए मूलदेव ने कहा, तुम पाटलिपुत्र नगर के गौतम गोत्री नागशर्मा ब्राह्मण की पुत्री, नागश्री की कोख से उत्पन्न हुई हो और खण्डपाना नाम से प्रसिद्ध हो।"

खण्डपाना ने कहा, 'तुम्हें वैसा ही मेरा रूप देख कर भ्रांति हो गई है। क्योंकि मैं नागशर्मा ब्राह्मण की पुत्री नहीं हूँ। राजा के धोबी की दग्धिका नामा बेटी हूँ। मेरा घर राज-मंदिर के समान ही धनधान्य से भरा पूरा है। हजारों मजदूरों को लेकर मैं राजा के अंतःपुर के वस्त्र धोती हूँ। एक समय मैं गाड़ियों में धोने के वस्त्र भर अपने हजार मजदूरों के साथ नदी तट पर गई थी। वस्त्र धो कर सूखने के लिए धूप में चहुं ओर फैला दिए गए थे। इतने में ही वहां महावायु बहने लगा ओर उसने सुखाए वस्त्रों को चारों ही दिशाओं में उड़ा दिया। वस्त्र नहीं लौटा सकने पर राजा से दण्डित किए जाने का मुझे बड़ा भय हुआ। इसलिए मैंने सब मजदूरों को जहां भी वे भाग सकें, भाग जाने का कह दिया। वे भाग गए। मैं भी राजा के दण्ड के भय से सारी रात गोह का रूप धारण कर नगर उद्यान में क्रीड़ा करती

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
रही । दिन में लोग कहीं छिपे हुए हैं, मुझे कोई नहीं दे, इसलिए प्रातःकाल होते ही मैं आम्रलता का रूप बना कर अशोक वृक्ष से लिपट गई । हवा में वस्त्र उड़ गए हैं, इसका पूर्ण विश्वास हो जाने पर न्यायवंत राजा ने डोंडी पिटवा कर घोषणा करा दी कि धोबी जहां कहीं भी छुपे हों, अपने-अपने घर लौट आएं । उन्हें क्षमा कर दिया गया है । यह घोषणा सुन कर मैं भी अपना स्त्री रूप धारण कर घर लौट आई । मेरे पिता नदी तट पर से वस्त्र ले जाने के शकट लौटा लाने के लिए गए । उन शकटों के रस्से और बैल जोने के चमड़े जोत सब शृगालों और कुत्तों ने खा डाले थे । इसलिए मेरे पिताः चूहे की एक पूंछ कहीं से खोज कर लाए और उससे शकटों के लिए रस्से और जोत आदि सब कुछ बना कर वे शकट घर लौटा लाए । क्या यह सत्य है किंवा असत्य ?'

उत्तर देते हुए तब शश ने कहा कि "चूहे की पूंछ का इतना बड़ा होना पूर्णतया विश्वास किया जा सकता है, क्योंकि पुराणों के अनुसार शिव लिंग आदि-अन्त हीन लंबा था और हनुमान की पूंछ इतनी लम्बी थी कि वह लंका के चारों ओर लपेटी जा सके और उस पर कपड़े बांध और उन पर तेल डाल कर आग लगा देने पर सारी लंका में आग लग गई । इसलिए चूहे की पूंछ की लंबाई में भी संदेह नहीं किया जा सकता है ।'

'हे खण्डपाना' ! इसी प्रकार तुम्हारा गोह एवं आम्रलता रूप हो जाना भी असत्य एवम् अविश्वसनीय नहीं है । क्योंकि

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
पुराणों में वर्णन है कि गंधारिकावर राजा मनुष्य देह छोड़ के अरण्य में कुरुबक वृक्ष रूप हो गया था। फिर राजा नहुष के सर्प रूप होने का भी वर्णन है। राजा नहुष ने इन्द्र को पराजित कर उसका इन्द्रासन छीन लिया था। इन्द्रासन प्राप्त करने पर वह बड़ा अभिमानी हो गया और एक समय उसने सुरगुरु वृहस्पति को रुष्ट कर दिया और उनके शाप से इन्द्रासन से च्युत हो कर वह अरण्य में महान अजगर हो गया। राज्य भ्रष्ट पांचों पाण्डव एकदा उस अरण्य में पहुँच गए। एकाकी उस अरण्य में घूमते हुए भीम को उस अजगर ने निगल लिया। खोज करते हुए अजगर के पास पहुंचे तो उसने उनसे सात प्रश्न किये जिनका उत्तर युधिष्ठिर ने पूर्ण संतोष जनक दे दिया। संतुष्ट हो कर अजगर ने भीम को वमन कर दिया और शाप से मुक्त हो कर नहुष भी फिर मनुष्य हो गया। यदि यह सब सत्य है तो तुम्हारा आम्रलता और गोह का रूप धारण करना और फिर मनुष्य बन जाना असत्य नहीं कहा जा सकता है।

इस प्रकार अपने अनुभवों की सत्यता के प्रमाण पुराणादि से प्रस्तुत कर दिए जाने पर खण्डपाना ने धूर्त नायकों के समक्ष यह प्रस्ताव किया, "यदि वे सब उसकी प्रभुता स्वीकार करें, तो वह सब धूर्त मंडली को उस दिन का भोजन देने को तैयार हैं। वह नहीं चाहती कि उसकी बुद्धि से वह सब को हरावे क्योंकि तब उन सब का इस जगत में कोड़ी जितना भी मूल्य नहीं रहेगा।" खण्डपाना की यह गर्वोक्ति सुन कर सब धूर्त-नायक एक साथ ही बोल उठे कि जब उनको

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donation
ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रमूर्ति तक भी नहीं जीत सके तो वह एक स्त्री उनको कैसे जीत सकती है ? वे उसकी प्रभुता स्वीकार कभी नहीं कर सकते हैं।"

इस पर खण्डपाना ने कहा, "अब वे तमाशा देखें कि वह उन्हें सब को सत्य ही हरा देती है या नहीं।" ऐसी चुनौती दे कर अपने अनुभव को कथा को उसने आगे चलाते हुए कहा, "मैं फिर राजा की आज्ञा से वायु द्वारा उड़े हुए वस्त्रों की खोज करने घर से निकली। बहुत काल पहले मेरे चार दास जो भाग कर गुप्त हो गये थे, उनकी और उड़े हुए वस्त्रों की खोज में सारी पृथ्वी पर भटकती हुई मैं यहां आई हूँ। मेरे वे चार भागे हुए दास तुम्हीं चारों हो और तुम्हीं ने मेरे वस्त्र भी चुराए हैं। जो इसे असत्य कहते हो तो सारी धूर्त मण्डली को प्रतिज्ञानुसार आज का भोजन कराओ और सत्य मानते हो तो फिर मेरी प्रभुता स्वीकार करो क्योंकि तुम ही वस्त्रों के चोर और भागे हुए मेरे चारों दास हो।

अब तो सब धूर्त बेहद लज्जित हुए और चातुर्याभिभूत हो जाने के कारण चुपके से सब ने खण्डपाना की प्रभुता स्वीकार कर ली और सब धूर्त मण्डली को अभी उसकी की हुई प्रतिज्ञानुसार उस रोज का भोजन देने के लिए कहा।

धूर्तों का पुरुषाभिमान मर्दन हो गया है यह देख कर खण्डपाना मुस्करा रही थी। जब धूर्त मण्डली ने भोजन के लिये उसे खूब ही विवश किया तो उसने वह भी स्वीकार कर लिया। तुरंत ही वह एक श्मशान में गई। वहां हाल

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
का ही मरा हुआ एक शिशु कोई अज्ञात व्यक्ति रख गए थे। उसको उसने उठा लिया। नहला धुला कर उसे उसने फटे पुराने कपड़े पहना दिये। फिर गोद में उसे लिए वह उज्जैन नगरी के महा-धनवंत सेठ के घर पर गई। लोगों से चहुं ओर घिरा एवम् व्यापार में व्यस्त सेठ को एक स्थान पर बैठा देखा। वह वहां तक पहुँच गई और बड़ी ही दीन परन्तु सेठ को क्रोधित करने वाली वाणी में वह कहने लगी, 'हे सेठ ! मैं एक दरिद्र ब्राह्मण की स्त्री हूँ। अनाथ और अशरण हूँ। इसलिये इस बालक को पालने के लिन धन की भीख मांगने में तुझ महाउपकारी के पास आई हूं। मुझे भिक्षा दो। इस प्रकार की बारम्बार याचना से तंग आ कर सेठ ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि वे उस पापिणी को मार कर घर से बाहर निकाल दें। सेवकों ने ज्योंही आज्ञा का पालन किया कि वह कपट से भूमि पर गिर कर ऊंचे स्वर से विलाप करती हुई चिल्ला उठी, 'हे लोगो ! देखो तो सही इस पापी सेठ ने धन के गर्व में अंधा होकर मुझ अनाथा निराधार के पुत्र को मरवा दिया है। मेरी तो यह एक मात्र आशा थी कि यह पुत्र बड़ा होकर एक दिन मेरी सब मनोकामना पूरी करेगा। आशा रूप मेरी उस वेलि को इस धनमत्त व्यवहारी ने मत्त हाथी की तरह उन्मूलन कर दी। अब मेरा क्या होगा ?' इस घटना से सेठ बड़ा ही उद्विग्न हो गया। उसे राजा द्वारा दण्डित किये जाने का महान् भय सताने लगा और राजा को सूचना मिले उससे पहले ही इसे शांत करने के लिये जो इच्छा हो सो द्रव्य

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations
मांग लेने को कहते हुए उसे उसने अपनी रत्न जड़ित अंगूठी अंगुली में से निकाल कर दे दी और मुर्दा शिशु को चुपचाप उठा ले जाने को भी राजी कर लिया। मुद्रिका लिए खण्डपाना उस उद्यान में लौट आई जहां कि वह सब धूर्त मण्डली के साथ ठहरी हुई थी। सब धूर्तों को वह मुद्रिका दिखा कर उसने बाजार में जा कर उसे बेच दिया और उससे प्राप्त धन से सब धूर्तों को जो कि भूख से कुड़मुड़ा और ठण्ड से ठिठुर रहे थे, उस दिन खूब मिष्ठान्नादि का भोजन करा दिया। खा पी कर स्वस्थ हो सब ने उसकी चतुराई और उदारता के लिए धन्यवाद दिया और स्वीकार किया कि पुरुष से स्त्री जन्म-जात ही बुद्धिमान है, जैसा कि कहा है—

अधीत्य शास्त्राणि विमुच्य चार्थान्
न तानि वस्तुं पुरुषाः समर्थाः।
यानि स्त्रियः प्रत्यनिधानकाले
वदन्ति लोलारचिताक्षराणि ।।

इस प्रकार खण्डपाना की प्रशंसा करते हुए धूर्त अपने-अपने स्थान को चले गए।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

चन्द्रशो प्रकाशन ग्रन्थमाला के प्रकाशन

१. अनोखी आन—राजस्थानी वीर तोगा की अमर कहानी,
लेखक—आचार्य बदरीप्रसाद साकरीया मूल्य २)

२. उपमिति-भव प्रपंचा कथा
लेखक—कस्तूरमल बांठिया मूल्य ४)

३. धूर्ताख्यान
लेखक—कस्तूरमल बांठिया मूल्य १)५०

४. नाहटा—बन्धु अभिनंदन ग्रन्थ
[श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा]
सचित्र—८०० पृष्ठ—अनेक शोधपूर्ण लेख, पुस्तकालयों एवं शोध-विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त
प्रधान संपादक—डा० दशरथ शर्मा
प्रबन्ध संपादक—रामवल्लभ सोमानी मूल्य १५१)

५. काम्पिल्य-रूप
[कम्पिलतीर्थ का शोधपूर्ण इतिहास]
सम्पादक—पं० कृष्णदत्त बाजपेयी मूल्य २१)

सम्पर्क सूत्र—

राज-ब्रदर्स

५२/१६ शक्कर पट्टी

कानपुर-२०८००१

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative